संगीत पर्यटन एक बहुउद्देशीय व्यवस्था है...

समाज में शांति एवं सौहार्द स्थापित करने में, सांगीतिक परम्पराओं को मजबूती प्रदान कर उसे आगे बढ़ने में, रोजगार के अवसर प्रदान करने में, राजस्व बढ़ने में, सीमा पार सम्बन्ध मजबूत बनाने आदि में संगीत पर्यटन वर्तमान में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है. संगीत पर्यटन कोई नई अवधारणा नही है. यह सामान्य पर्यटन में परोक्ष रूप से हमेशा से निहित रही है लेकिन वर्तमान में संगीत की लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत इसके स्वरूप में व्यापक विस्तार हुआ है, इसकी अवधारणा को बल मिला है और सरकारी और निजी प्रयासों से इसे एक विशेष गति मिली है. संगीत पर्यटन स्वयं में एक बहुउद्देशीय व्यवस्था है, जो एक ओर संगीत समारोह और उत्सवों के माध्यम से सांगीतिक परम्पराओं का संरक्षण करती है और उसे नई पीढी से जोडती है, संगीत उत्सवों का आयोजन अंतःराज्यी पर्यटन और अंतर्राजीय पर्यटन को बढ़ावा देते है, जिससे राजस्व की प्राप्ती होती है. रोजगार के अवसर बढ़ते है. संगीत वाद्ययंत्रों की आवश्यकता बढ़ती है.

सीमापार के देशों से सम्बन्ध मजबूत बनाने में विभिन्न प्रकार के खेलों का आयोजन और सांस्कृतिक आदान प्रदान की नीति का प्रयोग हमेशा से किया जाता रहा है. जिससे सांस्कृतिक पर्यटन को भी बल मिलता है.

प्रत्येक वर्ष सैकड़ो की संख्या में दुनिया भर से संगीत जिज्ञासु शास्त्रीय संगीत और नृत्य की शिक्षा लेने भारत आते है. बहुत से संगीत विद्यार्थी गुरुकुल परम्परा पर आधारित संगीत संस्थाओं में तालीम लेते है तो बहुत से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों में दाखिला लेते है. स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा ग्रहण करने के बाद कई विद्यार्थी शोध में भी पंजीकृत होते है. भातखण्डे संगीत संस्थान, लखनऊ; बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस; दिल्ली विश्वविद्यालय, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, विश्व भारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन, प. बंगाल आदि ऐसे शिक्षण संस्थान है जो प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से संगीत के जिज्ञासुओं को देश और विदेश से लगातार आकर्षित करते रहे है और संगीत पर्यटन को बढ़ावा दे रहे है. इसी क्रम में संगीत वाद्य यंत्रों का व्यापार भी आगे बढ़ता है. हालांकि संगीत वाद्यों यंत्रों के निर्माण को संगठित व्यवसाय के रूप से विकसित करने की दिशा में कोई प्रयास नही हुए है. इस पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है.

वर्ष 2021 का जनवरी अंक आपको सौंप कर अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ. साथ ही इस अंक के लेखकों का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने संगीत गैलेक्सी की प्रकाशन धारा को अनवरत रखने में हमारी मदद की. इसी क्रम में संगीत गैलेक्सी सम्पादक मंडल का भी धन्यवाद प्रेषित करता हूँ, जिनके प्रयास और मार्गदर्शन से यह अंक आप तक पहुंच सका.

सम्पादक